ऑचलिक उपन्यासों में चित्रित आदिवासियों की समस्याएँ

डॉ.बी.आर.बोडके
हिन्दी विभागाध्यक्ष
महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगाव
ता. अहमदपूर जि. लातूर

आदिवासी समाज अविकसित ऑचलों का निवासी है । भौतिक साधनों का अभाव, यातायात की कमी, सामान्य स्तर की मानसिकता उनकी जिन्दगी है । आदिवासियों का जीवन स्वच्छन्दी, मुक्त, प्रकृति के निकट रहा है । वनवासी रहे आदिवासी विकास योजना से पीडित बने । विकास योजना से उनका विस्थापन हुआ, वही महानगरों के निवासियों का जीवन सम्पन्न बना यही विडम्बना है । भौतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याएँ उनके साथी है । आज सरकार आदिवासियों के विकास के लिए विशेष प्रयास कर रही है, परन्तु विकास में मूल अडसर उनकी कई समस्याएँ है । हिन्दी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जनजीवन की समस्यायों पर बहुत सारे हिन्दी साहित्यकारों नें आपने लेखन साहित्य के माध्यम से प्रकाश डाला है ।

1. अंधविश्वास की समस्या :

भारतीय समाज व्यवस्था को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था 'धर्म' है । विज्ञान इसे 'अंधविश्वास' मानता है । आदिवासी जनजातियॉ अज्ञानी, धार्मिक, भोली–भाली होने के कारण अंधश्रध्दा का निर्माण हुआ । आदिवासी समाज वैज्ञानिक प्रगति से दूर, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से उपेक्षित होने के कारण, आपनी रक्षा के लिए मंत्र, तंत्र, जादू टोना, आदि की मदद लेता है ।

राजेन्द्र अवस्थी के 'जंगल के फूल' में गोंड द्वारा नारायण देवता को प्रसन्न कराने के लिए सूअर की बली चढाना, भूत–प्रेत का खण्डहर में या पेंडो पर रहना, पेड के नीचे दीप जलाने से संतान की प्राप्ति होना [1] शरीर गोंदने से अच्छा प्रेमी मिलना, अच्छी फसल के लिए बलि चढाना, बीमारी हटाने के लिए माता बिदाई का आयोजन करना [2] । 'जंगल के आसपास ' में पवित्रता के लिए स्त्री की अग्नि परीक्षा लेना, –जाने कितनी ऑखे' में संतान प्राप्ति के लिए तावीज बॉधना, 'पहाडी जीव', मे पुल बनाने के लिए नर बलि देना, 'सॉप और सीढी' में संकट न आए इसलिए दरवाजे पर जाली बॉधना आदि कई अंधविश्वासों का चित्रण हुआ है ।

2. शोषण की समस्या –

भारतीय समाज व्यवस्था में धार्मिक व्यक्ति धर्म, पाप–पुण्य का डर दिखाकर, सरकारी अफसर पद के कारण, जमींदार सम्पत्ति के बल पर, राजनेता लोक अधिकार के कारण आदि आम आदमी का शोषण कर रहे है । भारतीय समाज में वर्ण और वर्ग व्यवस्था रही है । डॉ. जाधव का कथन है, ' भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था में शक्ति और धन के आधार पर अवर्णो को इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा के अधिकारी बनाया है । समानता, मानवता की स्थापना होने से शोषण से मुक्ति मिलेगी । [3]

2.1 **जमींदारों द्वारा शोषण** – आदिवासी जंगल, जमीन पर अधिकार मानते हैं । लेकिन जमीन हडपना, बेगार लेना, फसल लूटना जमींदार करते है । 'जंगल के आसपास' में रायसाहब द्वारा गरीब किसानों से आलू, टमाटर लेना, मजदूरी न देना[4],'शेलूष' में नटों की जमीनें हडपना, पुलिस को जमींदारा द्वारा रिश्वत देकर नटों की पिटाई होना,,'भूख' में बेगार लेना, ठाकूर द्वारा नागेसिया के घर को आग लगाना [5]'धार'में आदिवासियों की जमीन पर तेजाब का कारखाना शुरु करना आदि विभिन्न रुपों में आदिवासियों का जमींदारों द्वारा शोषण होता है।

2.2 **धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण** –

आदिवासी अंधश्रध्दा होने के कारण ओझा, पंडित पाप–पुण्य, स्वर्ग– नरक की बातें करके शोषण करते है । ज्ञानचन्द गुप्ता के शब्दों में 'आज कई धर्म धार्मिक कट्टरता को त्यागकर धर्मनिरपेक्षता की और अग्रसर है ।[6] धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान का प्रधान तत्व है, परन्तु भारतीय मानस पर 'धर्म' का प्रभाव होने के नाते उसे नकारा नही जाता । परिणामतः शोषण हो रहा है ।

'जाने कितने ऑखे' में रहमतुल्ला द्वारा हिन्दू लडकी को मुसलमान बनाना, 'शैलूष' में ब्राम्हण घुरफेकन द्वारा होम यज्ञ में पच्चीस हजार रुपया दान लेना, 'बनवासी' में पंडित के कहने पर ही लडकी का सयानी होना मानना, झांडफूक करना, देवता का संचार होना, देवता का बोलना, भूट हटाना, बलि देना आदि रुपों में आदिवासियों का शोषण किया जाता है ।

2.3 **पुलिस तथा अफसरों द्वारा शोषण** –

आजादी के पश्चात देश के विकास के लिए विभिन्न अधिकारियों की नियुक्तियॉ हो गई । इससे आम आदमी कितना संपन्न हुआ ? कितनी योजनाएँ सफल रही ? यह अनुसंधान का विषय हो सकता है ।

'कब तक पुकारु' में दरोगा द्वारा गुण्डों का पक्षधर बनाना, जबरदस्ती करना, वस्ती पर जुल्म करना, दरोगा द्वारा रखैल रखना आदि दिखाई देता है । 'भूख' में जंगल से महुआ लेकर आने वाली लडकियों पर तहसीलदार द्वारा लाठी चलना, 'जंगल के आसपास' में पुलिस थाने में आदिवासी युवती पर अत्याचार करना, 'जंगल जहॉ शुरु होता है' में निरपराधी बिसराय के घर की पुलिस द्वारा तलाशी लेना, औरतों की पिटाई करना । यही स्थिति बनी रही तो आम आदमी की कौन रक्षा करेगा यह सवाल सोचने को मजबूर करता है ।

3. जातीय भेदभाव की समस्या –

'जंगल के फुल' में गोंड झिरिया का पंजाबी युवक से विवाह न होना इसका प्रमाण है । गोंड का कथन देखिए, पिरेम की लगाम टुट गई है । पर जात से ब्याह करने चली थी, जब रोका तब गॉव के लिए मुसीबत बनी। ' जाने कितनी ऑखे' में हिन्दू–मुसलमानों में संघर्ष होना, अब्दुल रहमान द्वारा पचास हिन्दू लडकियों को मुसलमान बनाना तथा ब्राहमण सुवेगा और कुरमी कमलापत के विवाह का विरोध होना, अलग बस्ती होना जातीयता के प्रमाण है । 'एकलव्य' में निषाद जाति को हीन मानना, शिक्षा के अधिकार से वंचित रखना, 'धार' में संथाल मैना द्वारा गैर आदिवासी को पति मानने से जातपंचायत द्वारा उसे अपराधि मानना आदि से उनमें स्थित जातीयता की भावना स्पष्ट होती है ।

4. अशिक्षा की समस्या –

मानवीय समाज विकास का आधार शिक्षा है । लेकिन आदिवासी समाज शिक्षा से कोसौ दूर रहा है इसी कारण वह इस व्यवस्था का शिकार बना है । डॉ.पी.आर.नायडू का

कहना है, '' आदिवासियों के शोषण, बिछडेपन, गरीबी का प्रमुख कारण उनका अशिक्षित होना ही है । [7]

रांगेय राघव के 'कब तक पुकारुँ' का सुखराम अज्ञान के संदर्भ में कहना है, जब तक करनट शिक्षित नही होते तब तक वे कुत्ते की मौत मरते रहेंगे । [8] राजेन्द्र अवस्थी के 'जंगल के फुल' में बस्तर के गौंड नारायणपुर में खोले स्कूल को भूमकाल में उडा देते, बच्चों को पाठशाला नही भेजते । 'जंगल के दावेदार' में मुंडा पढना नहीं चाहते, वे कहते है, जो पढेगा वह किसान बनेगा, ठिक होगा, लोगों को लूटेगा । [9] आदि उपन्यासों में अशिक्षा के कारण हुए अन्याय अत्याचार से अदिम समाज कैसे पिसा गया है इसका वर्णन मिलता है ।

5. धर्मांतर की समस्या –

भारतीय समाज में धर्म एक ताकत, संगठन रहा है। धर्म नैतिक, आध्यात्मिक मान्यता स्थापित करनेवाली सर्वमान्य व्यवस्था है। लेकिन धर्मान्ध, मतलबी धार्मिक व्यक्ति अपने ही भाव से धर्म की व्याख्या कर रहै है । उसी कारण आम समाज के शोषण का कारण धर्म बना है ।

गुरुदत्त के 'वनवासी' में हिन्दू बडौज ईसाई बनकर मनचाहा विवाह रचाना, 'शैलूष' में एक ही नट परिवार के सदस्यों का ईसाई और मुसलमान बनना, 'सुरज की कीरण छॉव' में बंजारी बैजो को धन देकर विलियम द्वारा ईसाई बनाना, पहाडी औरत का कथन है, 'यहॉ पैसों के बलपर ईसाई बनाया जाता है, आदमी के पास पैसे रहे तो कोई ईसाई नही बनेगा, पैसा नही तो ईसाई बनेंगे' । [10]

6. विस्थापन की समस्या –

भारत सरकार ने अविकसित भागों में बिजली, कारखानों का निर्माण किया । हजारों गॉवो, करोडों आदिवासियों का विस्थापन हुआ । परन्तु विस्थापनों का पुनर्वास एक समस्या बनी । महाश्वेता के 'भूख' में बिहार के ओरांव भुईया आदिम जाति खेडा बांध परियोजना का विरोध करती है । तीस आदिवासी गॉवो को मृत्यूदण्ड दिया गया । [11] स्वर्ण रेखा प्रकल्प, खडकाहू बॉध योजना ऐसी ही योजना है जिसका विरोध होता है । सुरेशचन्द्र के 'बनतरी' संजीव की 'धार' मे आदिवासियों का कोयला खदान में हुआ विस्थापन चित्रित किया है । विस्थापितों ने नगरों का सहारा लिया परिणामतः झुग्गी झोपडियों का निर्माण हुआ ।

हिन्दी ऑचलिक उपन्यासों मे आदिवासी समाज जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है । दलित, आदिवासी, पहाडी जन आज भी अविकसित, उपेक्षित, शोषित रहे है । जब तक निम्न तर का विकास नही होता तब तक देश को विकसित नही कहा जाता । आज आदिवासी की भूमि सरकारी योजना के लिए मिटटी की मोल ले जाती है, परन्तु विकास से उन्हे लाभ तो नही मिलता बल्कि विनाश ही होता है । फिर भी उपर्युक्त आदियों की समस्यायोंपर सरकार को सोचना होगा, नही तो प्राकृतिक सौंदर्य का केन्द्र पहाडी अंचल, विद्रोह का अड्डा बनेगा ।

संदर्भ साहित्य :

1. राजेन्द्र अवस्थी, 'जंगल के फूल' पृ.109
2. शानी, 'शालवानो का द्वीप' पृ. 117
3. डॉ. बलवंत जाधव 'प्रेमचन्द साहित्य में दलित चेतना, पृ. 183
4. राकेश वत्स, 'जंगल के आसपास' पृ. 97
5. महाश्वेता देवी, 'दूख' पृ. 13
6. ज्ञानचन्द्र गुप्त, 'स्वांत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्रामचेतना पृ. 188
7. पी.आर. नायडू, 'भारत के आदिवासी' पृ. 106
8. रांगेय राघव, 'कब तक पुकारुँ' पृ. 352
9. महाश्वेता देवी, 'जंगल के दावेदार' पृ. 72
10. राजेन्द्र अवस्थी, 'सूरज किरण की छांव' पृ. 109
11. महाश्वेता, 'भूख' पृ. 57